घोषणावीर खट्टर, जुमलों की बरसात, काम का सूखा

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते आठ साल से हरियाणा की सत्ता पर काबिज खट्टर अकेले नवम्बर माह में करीब 6 बार इस शहर में पधार कर सौगाती जुमलों की बरसात किये जा रहे हैं। हजारों करोड़ की सौगात बरसा कर सुर्खियां बटोरने वाले खट्टरजी शायद यह माने बैठे हैं कि कुछ करने-धरने की बजाय मीडिया द्वारा प्रोपेगेंडा करके जनता को बेवकूफ़ बनाया जा सकता है। इसी माह वे पहले तो दुख निवारण समीति की मीटिंग द्वारा नगर वासियों के दुखों का 'निवारण' करते हैं, फ़िर अगले ही दिन शाही दरबार लगा कर बड़े पैमाने पर जनता की समस्यायें सुनकर उनके निवारण का नाटक खेलते हैं, जबकि हालात बद से बद्तर होते जा रहे हैं।

जनता की उम्मीदों को जिंदा रखने के लिये इसी सप्ताह उन्होंने 2500 करोड़ रुपये की सौगातें इस शहर पर बरसा दी हैं। अपने पूरे शासनकाल में इस तरह की बरसाई सौगातों की गिनती करें तो ये लाखों-करोड़ की बनती हैं। इसी तरह के बरसात खट्टरजी राज्य के हर क्षेत्र में आये दिन करते रहते हैं।

इन सब का जोड़ लगाया जाय तो ये राशि हरियाणा की कुल बजट का कई गुणा बन जाती है। बनती है तो बन जाय क्या फर्क पड़ता है,जुमले ही तो फेंकने हैं, कौनसा कुछ करके देना है?

खट्टर के सत्तासीन होने से पहले जो समस्यायें यह शहर झेल रहा था उनमें कोई कमी होना तो दूर बल्कि बेतहाशा बढोत्तरी होती जा रही है। पेयजल संकट, उफनते सीवर, खुले मेनहोलों व सड़कों के गड्ढों में गिरकर मरनेवालों की संख्या पहले से कहीं ज्यादा होती जा रही है। शहर के भीतरी इलाकों की मुख्य सड़कें बीते दो-दो तीन-तीन साल से खड्डों में परिवर्तित हो चुकी हैं। इन पर चलना खतरे से खाली नहीं रहता। इनसे उड़ने वाली बेतहाशा धूल तथा वाहनों का अतिरिक्त धुआं जहां वायु प्रदूषण को बढ़ाता है वहीं दूसरी ओर वाहनों की टूटे-फुट में भी वृद्धि होती है। चार बूंद पानी की बरसते ही शहर कीचड़ से भर जाता है, सड़कों पर वाहन डूबने लगते हैं, तीनों अंडरपास कई-कई दिनों के लिये बंद हो जाते हैं, इनमे कई बार दुर्घटनायें भी हो चुकी हैं।

कुल मिलाकर खट्टर महोदय ने अपने शासन काल में कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे नगरवासियों को दरपेश समस्याओं से कोई निजात मिल पाती। हां, धरातल पर कोई काम किये बगैर फ़ाइलों में जरूर सैंकड़ों, हजारों करोड़ के काम कर दिये गये हैं। रोजमर्रा होने वाले इस तरह के घोटालों में से फिलहाल नगर निगम के 200 करोड़ वाले घोटाले की जांच का नाटक जरूर चल रहा है। नाटक इसलिये कि जांचकर्ता अधिकारी केवल छोटे अधिकारियों पर ही शेर हो रहे हैं जबकि उच्चाधिकारियों के सामने बिल्ली बने हुए हैं। बताने की जरूरत नहीं कि उच्चाधिकारियों एवं राजनेताओं की मिलीभगत के बिना छोटे अधिकारियों की हिम्मत नहीं हो सकती कि वे एक पैसा भी डकार पायें।

फरीदाबाद को नोएडा से जोड़ने के लाभ कब तक गिनाते रहोगे ?

15 अगस्त 2014 को मंझावली स्थित यमुना पुल का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय सड़क मंत्री नितिन गडकरी तथा कृष्णपाल गूजर ने इस पुल के लाभ गिनाये थे। उस दिन से लेकर अब तक कृष्णपाल गूजर व मनोहर लाल खट्टर कई बार इस पुल के (न जाने कब) बन जाने से जनता को होने वाले लाभों का विवरण बता-बता कर जनता के बीच अपनी ही पीठ खुद थपथपाते आ रहे हैं। यही काम खट्टर जी ने इस सप्ताह भी अपने भाषण द्वारा कर दिया। उन्होंने मंझावली पुल का नाम लिये बगैर बताया कि फ़रीदाबाद-नोएडा-गाजियाबाद के नाम से एफएनजी मार्ग बनवायेंगे। सुधी पाठक समझ लें कि यमुना के पार जो भी सड़क बनेगी उसे उत्तर प्रदेश सरकार ही बना सकती है, खट्टर का वहां कोई दखल नहीं हो सकता। इससे गुड़गांव-फ़रीदाबाद से नोएडा-गाजियाबाद जाना आसान व सस्ता हो जायेगा। कालिंदीकुंज होकर नहीं जाना पड़ेगा जिससे समय व तेल की बचत होगी, आदि-आदि। ये सारे लाभ जनता को बखूबी मालुम हैं। सवाल मोटा यह है कि यह लाभ जनता को मिलने में और कितने दशक लगेंगे खट्टर जी?

इसके अलावा जब कुछ करने की नीयत न हो तो आठ वर्ष पुरानी बनी सुरजकुंड रोड की मरम्मत, पानी के बूस्टर स्टेशनों, व किसी पार्क आदि का उद्घाटन ही कर लिया जाय तो क्या हर्ज है? टाइमपास के लिये विचार अच्छा है। संदर्भवश 70 करोड़ की लागत से बनी सूरजकुंड रोड की मरम्मत का बजट 20 करोड़ रखा गया है।

कोहरे के नाम पर 100 से अधिक ट्रेन सेवायें रद्द

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

मीडिया में प्रकाशित खबरों के अनुसार रेलवे ने 100 से अधिक ट्रेन सेवायें कोहरे के कारण रद्द करने की घोषणा की हैं। इनमें दिल्ली से पलवल, गाजियाबाद, रेवाड़ी, फरूखनगर, अमृतसर, देहरादून, डिब्रूगढ़, आजमगढ़, वाराणसी, दरभंगा, कलकत्ता, भरूच आदि-आदि को जोड़नेवाली ट्रेन सेवायें दिसम्बर से फ़रवरी तक रद्द रहेंगी। स्पष्ट दिख रहा है कि इनमें छोटी दूरी की शटल ट्रेनें भी हैं और लम्बी दूरी की ट्रेनें भी।

कोहरा अभी कहीं आस-पास दिखाई भी नहीं दे रहा कि भारत सरकार की रेलवे के मुंह में अभी से झाग आने शुरू हो गये। बेशक अभी यह नहीं पता कि कोहरा कब-कब और कितना-कितना पड़ेगा लेकिन भारतीय रेलवे ने दिसम्बर से 28 फ़रवरी तक के लिये चादर ओढ़ कर सोने का निर्णय कर लिया है। गौरतलब है कि सड़कों पर चलने वाले वाहनों तथा हवाई जहाजों को कोहरे से कोई परहेज नज़र नहीं आता। हां, कभी-कभार कुछ समय के लिये कोहरे की परिस्थिति के अनुसार इनके परिचालन में कुछ व्यवधान जरूर होता रहेगा, लेकिन इन्होंने तीन महीनों के लिये चादर नहीं ओढ़ी।

आज के वैज्ञानिक युग में जब हवाई-जहाजों को कोहरे तथा खराब से खराब मौसम होने की परिस्थितियों में भी परिचालन के उपाय खोज लिये गये हैं तो रेलवे को इन्हें अपनाने में क्या मुसीबत है? कोहरा आज कोई पहली बार इस देश में नहीं आने जा रहा, यह तो कभी से ही आता-जाता रहता है, लेकिन रेलवे ने कभी भी इस तरह से हाथ नहीं खड़े किये। दर-असल कोहरे का तो बहाना है। जिस नालायकी एवं गैर पेशेवर ढंग से रेलवे का प्रवंधन किया जा रहा है उसके चलते इस तरह की परिस्थितियों का आना स्वाभाविक है। विदित है कि रेलवे में 15 लाख कर्मचारियों की जगह मात्र 12 लाख लोगों से ही काम लिया जा रहा है। जाहिर है कि कर्मचारियों की इस भारी-भरकम कमी के चलते इसे सुचारु ढंग से चलाया ही नहीं जा सकता। एक मूर्ख व्यापारी की भांति सरकार तीन लाख कर्मचारियों का वेतन बचाने के चक्कर में कितना बड़ा नुक्सान कर रही है, इसका उसे ज्ञान ही नही है। अर्थात 'चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय'।

इसके पीछे एक और कारण यह भी समझा जाता है कि सड़क परिवहन को बढ़ाना है। इसके बढ़ने से वायु प्रदूषण भले ही जितना मर्जी बढ़ जाय, तेल आयात पर भले ही खर्च बढ़ जाय लेकिन तेल से मिलने वाला आयातशुल्क, वैट और टोल-टैक्स से होने वाली लूट कमाई तो बढेगी ही।

आजकल जिस ढंग से सड़कों का विस्तार और उन पर लगने वाला टोल बढ़ता जा रहा है, सड़क परिवहन में गिरावट नज़र आ रही है। सरकार ने टोल कमाई का जो अनुमान लगा रखा था, वह पूरा नहीं हो पा रहा है। इसी के मद्देनजर अधिकाधिक रेल पटरियां बिछाकर ट्रेन

सेवाओं में वृद्धि करने की अपेक्षा सड़क निर्माण पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। इसी सोच के चलते पानीपत से चौटाला तक तथा अम्बाला से दिल्ली के बीच यमुना के साथ-साथ दो नये राजमार्ग बनाने की तैयारी पूरी हो चुकी है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।